

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री माँ दुर्गा नमः ॥

श्री नवदुर्गा स्तोत्रम्

Navdurga Stotram — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: परंपरागत (मार्कण्डेय पुराण / दुर्गा सप्तशती परंपरा) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥ १ ॥

भावार्थ: हे माँ शैलपुत्री! अपने समस्त मनोवांछित फलों और आध्यात्मिक कामनाओं की सिद्धि हेतु मैं आपके पावन चरणों में वंदना करता हुँ। अपने मस्तक पर अर्धचंद्र का दिव्य मुकुट धारण करने वाली, वृषभ (नंदी बैल) पर आरूढ़ और हाथ में त्रिशूल धारण करने वाली परम यशस्विनी हे पर्वतराज हिमालय की पुत्री माँ शैलपुत्री! आपको मेरा कोटि-कोटि नमन है।

श्लोक २

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥ २ ॥

भावार्थ: अपने कमल के समान सुंदर दोनों हाथों में रुद्राक्ष की जपमाला और कमंडलु धारण करने वाली, कठोर तप और ब्रह्मचर्य की साक्षात् मूर्ति हे सर्वोत्कृष्ट देवी ब्रह्मचारिणी! आप मुझ पर सदा प्रसन्न और कृपालु रहें तथा मुझे विद्या, तप और संयम का पावन वरदान प्रदान करें।

श्लोक ३

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥ ३ ॥

भावार्थ: श्रेष्ठ पराक्रमी सिंह पर सवार होने वाली, दुष्टों व दैत्यों के संहार हेतु प्रचंड क्रोध और विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से सुशोभित, घंटे के आकार का अर्धचंद्र धारण करने के कारण संसार में 'चन्द्रघण्टा' नाम से विख्यात हे करुणामयी माँ! आप मुझ भक्त पर अपनी असीम कृपा और आशीर्वाद का विस्तार करें।

श्लोक ४

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे॥ ४ ॥

भावार्थ: अपनी मंद और दिव्य मुस्कान से ब्रह्मांड की रचना करने वाली, अपने दोनों कर-कमलों में अमृत व शक्ति से भरा कलश धारण करने वाली हे माँ कूष्माण्डा! आप मेरे जीवन में सदा समस्त शुभता, आरोग्य, तेज और परम ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हों।

श्लोक ५

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥ ५ ॥

भावार्थ: दिव्य सिंहासन पर नित्य विराजमान रहने वाली, अपनी दोनों भुजाओं में कमल पुष्प धारण करने वाली तथा अपनी गोद में भगवान स्कन्द (कार्तिकेय जी) को विराजित रखने वाली परम यशस्विनी हे माँ स्कन्दमाता! आप मुझ पर सदैव अपनी शुभ और मंगलमयी कृपा बनाए रखें।

श्लोक ६

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी॥ ६ ॥

भावार्थ: हाथ में चंद्रहास नामक दिव्य व उज्ज्वल खड्ग (तलवार) धारण करने वाली, भव्य सिंह की सवारी करने वाली और महिषासुर आदि दानवों का संहार करने वाली महर्षि कात्यायन की तपस्या से प्रकट हे देवी कात्यायनी! आप मुझे जीवन में सर्वत्र विजय, निर्भयता और शुभ फल प्रदान करें।

श्लोक ७

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी॥ ७॥

भावार्थ: सिर पर एक वेणी (खुले केश), कानों में जवाकुसुम के कर्णफूल धारण करने वाली, गर्दभ पर सवार, घने अंधकार के समान कृष्ण वर्ण और शत्रुओं के लिए अत्यंत भयंकर रूप वाली हे माँ कालरात्रि! आपका बायाँ पैर लोहे के आभूषण से सुशोभित है। दुष्टों का नाश और भक्तों को अभय तथा शुभ फल देने के कारण 'शुभंकरी' नाम से पूजित हे माँ! आप मेरे समस्त भय, संकट और नकारात्मक शक्तियों का समूल विनाश करें।

श्लोक ८

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा॥ ८॥

भावार्थ: श्वेत वृषभ पर सवार होने वाली, श्वेत वस्त्र और आभूषण धारण करने वाली, परम पवित्र और करुणामयी, देवाधिदेव महादेव शिव जी को परम आनंद प्रदान करने वाली हे माँ महागौरी! आप मेरे जीवन के समस्त पापों और संतापों को धोकर मुझे सुख, शांति और परम मंगल प्रदान करें।

श्लोक ९

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥ ९॥

भावार्थ: सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, ऋषि-मुनि, देवता और असुरों द्वारा जिनके युगल चरणों की नित्य सेवा-पूजा की जाती है, जो अणिमा, महिमा आदि समस्त अष्ट सिद्धियों और नवनिधियों को देने वाली हैं — वे भगवती सिद्धिदात्री मुझ पर सदा प्रसन्न रहें और मेरी समस्त मनोकामनाओं को सिद्ध करें।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं समय:** इस स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन प्रातः अथवा सायंकाल किया जा सकता है। विशेष रूप से **चैत्र एवं शारदीय नवरात्रि**, प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की **दुर्गाष्टमी**, **महानवमी** तथा **शुक्रवार व मंगलवार** के दिन इसका पाठ करना अत्यंत फलदायी माना गया है।
- **शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि:** स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ लाल अथवा पीले वस्त्र धारण करें। मन को शांत और एकाग्र कर पूजा स्थान पर बैठें।
- **दिशा एवं आसन:** पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुशा, ऊन अथवा लाल रंग के स्वच्छ आसन पर बैठें।
- **दीप एवं वेदी स्थापना:** माँ दुर्गा की प्रतिमा अथवा चित्र के समक्ष शुद्ध गाय के घी का या तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करें। धूप और अगरबत्ती जलाकर वातावरण को सुगंधित करें।
- **पूजन सामग्री:** माँ को रोली, अक्षत, लाल पुष्प (विशेष रूप से गुड़हल या लाल गुलाब) अर्पित करें। भोग के रूप में मिश्री, ऋतुफल, हलवा अथवा पंचमेवा का नैवेद्य लगाएं।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **मनोवांछित फलों और संकल्पों की सिद्धि:** प्रथम श्लोक में उद्घोष है — *'वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्, वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्'*. माँ शैलपुत्री के ध्यान से साधक के अंतर्मन में दृढ़ता आती है और उसकी सभी सात्विक मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- **तप, एकाग्रता और ज्ञान-विद्या की वृद्धि:** द्वितीय श्लोक में प्रार्थना की गई है — *'दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू, देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा'*. माँ ब्रह्मचारिणी के अनुग्रह से विद्यार्थियों, साधकों और जिज्ञासुओं को एकाग्रता, उत्कृष्ट विद्या और नैतिक संयम की प्राप्ति होती है।
- **घोर संकटों, भय और शत्रुओं पर विजय:** षष्ठ श्लोक में वर्णन है — *'चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना, कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी'*. माँ कात्यायनी और माँ कालरात्रि के प्रभाव से साधक तंत्र-मंत्र, नजर-दोष, ग्रह-पीड़ा और गुप्त शत्रुओं के भय से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
- **आरोग्य, तेज और दीर्घायु का वरदान:** चतुर्थ श्लोक में वंदना है — *'सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च, दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे'*. माँ कूष्माण्डा की कृपा से साधक का शारीरिक तेज बढ़ता है, असाध्य रोग शांत होते हैं और जीवन में उत्साह का संचार होता है।
- **अष्ट सिद्धियाँ एवं मोक्ष की प्राप्ति:** नवम श्लोक का फलश्रुति वचन है — *'सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि, सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी'*. माँ सिद्धिदात्री के चरण-कमलों का ध्यान करने से साधक को लौकिक ऐश्वर्य के साथ-साथ आत्मज्ञान और परम मोक्ष की प्राप्ति होती है।